डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. बी. कॉलेज,
बारा-चाकिया।

B.A. Part- II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper- III

Date:- 18-02-2022

Ajanta
Page No.
Date

TDC-II

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

कहानी की पुरानी परम्पराओं के साथ नई परम्पराओं का उदय और विकास हुआ जिसका वर्णन इस प्रकार है -

मनोविश्लेषणवादी परम्परा में मुख्यतः जैनेन्द्र कुमार, भगवती प्रसाद वाजपेयी, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी प्रभृति लेखक आते हैं। जैनेन्द्र कुमार के अनेक कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए; यथा - 'वातायन', 'स्पर्द्धा', 'फाँसी', 'पाजेब', 'जय-सन्धि', 'एक रात', 'दो चिड़ियाँ' आदि। जैनेन्द्र जी ने स्थूल समस्याओं के स्थान पर सूक्ष्म-मनोविज्ञान का चित्रण करते हुए हिन्दी कहानी को नई अन्तर्दृष्टि, संवेदनशीलता और दार्शनिक गहराई प्रदान की है।

भगवती प्रसाद वाजपेयी ने जैनेन्द्र जी की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए अनेक कहानियाँ लिखीं जो 'हिलोर', 'खाली बोतल' आदि में संगृहित है। इनके कहानियों में विश्लेषण की गम्भीरता के साथ-साथ मार्मिकता और रोचकता का गुण भी मिलता है। अज्ञेय ने मनोविश्लेषणात्मक कहानियाँ लिखीं जो 'विपथगा', 'परम्परा', 'कोठरी की बात', 'जयदोल' आदि में संगृहीत हैं।

इलाचन्द्र जोशी ने अपनी कहानियों में मनोविश्लेषण के आधार पर सूक्ष्म मानसिक तथ्यों का उद्घाटन मर्मस्पर्शी रूप में किया है।

Scanned by CamScanner

उनके कहानी-संग्रहों में 'रोमाण्टिक छाया', 'आहुति', 'दिवाली और होली' आदि महत्वपूर्ण है।

यथार्थपरक सामाजिक परम्परा हिन्दी के विभिन्न कहानीकारों ने आधुनिक समाज की विभिन्न परिस्थितियों एवं समस्याओं का उद्घाटन यथार्थपरक दृष्टिकोण से किया है। चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने अपनी कहानियों में राष्ट्रीय एवं सामाजिक समस्याओं का चित्रण अत्यधिक कलात्मक ढंग से किया है। इनके कहानी-संग्रहों में 'चन्द्रकला', 'भय का राज्य', 'अमावस' आदि उल्लेखनीय हैं। राम प्रसाद पहाड़ी ने यौन प्रवृत्तियों आदि का उद्घाटन व्यंग्यात्मक शैली में किया गया है। साथ ही आधुनिक समाज की अनैतिकता, उच्छृंखला एवं स्वच्छन्दता का दिग्दर्शन कराया है। उनकी कहानियों के एक दर्जन से अधिक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं; जैसे - 'अधूरा चित्र', 'सड़क पर', 'नया रास्ता', 'बया का घोंसला' आदि।

डॉ. सत्यप्रकाश सेंगर ने उच्च वर्ग की भोग लिप्सा, सरकारी अधिकारियों के भ्रष्टाचार, नेताओं के पाखण्ड आदि का चित्रण करते हुए वर्तमान समाज की विभिन्न पक्षों की आलोचना व्यंग्यात्मक शैली में की है। उनके कहानी-संग्रहों में 'अवगुण्ठन', 'नया मार्ग', 'कितना ऊँचा कितना नीचा', 'मुझे टिक दो' आदि उल्लेखनीय है। इस परम्परा में आने वाले अन्य कहानीकारों

Scanned by CamScanner

में जानकी बल्लभ शास्त्री, शम्भूनाथ सिंह (राजरानी), शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी प्रभृति उल्लेखनीय हैं।

प्रगतिवादी परम्परा में मुख्यत: यशपाल, अमृतराय, मन्मथनाथ गुप्त, रांगेय राघव, श्री कृष्णदास प्रभृति कहानीकारों को स्थान दिया जा सकता है। यशपाल ने समाजवादी-साम्यवादी दृष्टिकोण से आधुनिक समाज की विषमताओं का उद्घाटन अपनी कहानियों में किया है। इनकी कहानी संग्रहों में "पिंजरे की उड़ान", "वो दुनिया", "तर्क का तूफान", "फूलों का कुर्ता", "उत्तमी की माँ" आदि उल्लेखनीय हैं।

ऐतिहासिक-सांस्कृतिक परम्परा में वृंदावन लाल वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, भगवतशरण उपाध्याय प्रभृति ने अपनी विभिन्न कहानियों में अतीत की घटनाओं, परिस्थितियों एवं वातावरण का चित्रण सजीव रूप में किया है।

यौनवादी परम्परा में हिन्दी के अनेक कहानीकारों ने अपनी कहानियों में काम-वासना, सौंदर्य-लिप्सा एवं प्रणय आदि का चित्रण स्वच्छंद रूप में किया है। इनमें आरसी प्रसाद सिंह "कालरात्रि", किशोर साहू "ईसू के फूल", प्रभृति का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ब्रजेन्द्रनाथ गौड़ "बिखरी कलियाँ" प्रभृति ने यौन सम्बन्धी समस्याओं का चित्रण बौद्धिक दृष्टि से तथा

Scanned by CamScanner

कहीं-कहीं मनोविश्लेषण के आधार पर किया गया है।

काशीनाथ उपाध्याय, रघुकुल तिलक, कुटिलेश प्रभृति ने आधुनिक जीवन और समाज के विभिन्न पक्षों पर रोचक व्यंग्यात्मक कहानियाँ लिखी हैं।

उक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रेमचन्दोत्तर कथाकारों में मनोविश्लेषण प्रवृत्ति की प्रधानता है। वर्ग संघर्ष एवं यथार्थवाद की ओर रूझान भी कुछ कहानीकारों का रहा है तथा उन्होंने प्रतीकात्मकता एवं सांकेतिकता का सहारा भी लिया है। इस काल में प्रेम, रोमांस, एवं यौन समस्याओं को भी कहानीकारों ने अपनी विषय वस्तु बनाया है। कहानी के शिल्प ने भी इस काल में उत्तरोत्तर प्रगति की है। अब कहानी में घटना विरलता के साथ-साथ व्यक्ति चरित्र पर विशेष बल दिया जाने लगा है।

Scanned by CamScanner